प्रकाशनार्थ

पटना, 24 फरवरी। इंडियन इंस्टीच्यूट आॅफ टेक्नोलाॅजी (इंडियन स्कूल आॅफ माइन्स) धनबाद की प्रोफेसर लीजा मल्लिक ने आज जूम पर ''इलेक्ट्रिफाइंग लाॅजिस्टिक्सः असेसिंग द वायबलिटी आॅफ इएलसीवी इन झारखंड ट्रांसपोर्ट सेक्टर'' नामक व्याख्यान दिया। यह एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इन्स्टीच्यूट (आद्री) के सेंटर फाॅर स्टडीज आॅन इनवायरन्मेंट एण्ड क्लाइमेट (सीएसईसी) के सौजन्य से किया गया। आईआईटी (आईएसएम) धनबाद ने आद्री के साथ मिलकर हाल ही में एक अध्ययन किया जिससे यह निर्धारित किया जा सके कि क्या इलेक्ट्रिक लाइट कमर्शियल व्हीकल्स (eLCVs) झारखंड के शहरी माल परिवहन क्षेत्र में कुछ स्थिरता ला सकते हैं। eLCVs किसी भी शहर की आर्थिक वृद्धि में एक अनिवार्य भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे शहरी क्षेत्रों में व्यावसायिक वस्तुओं के परिवहन के लिए जिम्मेदार होते हैं।

प्रोफेसर लीज़ा मलिक ने कहा कि जीवाश्म ईंधन से चलने वाले LCVs के पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव के कारण eLCVs को अपनाने की दिशा में तेजी आ रही है। उन्होंने कहा कि भारत में 2030 तक ईएलसीवी प्रवेश दर 27 प्रतिशत तक पहुंचने वाली है । झारखंड में मालवाहक वाहनों के विद्युतीकरण की प्रक्रिया कैसे होगी, इस पर अब तक कोई अध्ययन नहीं किया गया था। ऐसे में, आद्री ने सहयोग किया और विभिन्न प्रकार के eLCVs, जैसे मिनी-ट्रक, पिक-अप ट्रक, तीन-पहिया मालवाहक वाहन और दो-पहिया वाहन पर एक व्यापक सर्वेक्षण किया।

इस अध्ययन की एक महत्वपूर्ण खोज यह है कि सब्जियों और निर्माण सामग्री के परिवहन को eLCVs के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। इसलिए सरकार को इन दोनों वस्तुओं के लिए eLCVs को अपनाने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके अलावा, नवाचारपूर्ण वित्तीय योजनाओं को तैयार किया जाना चाहिए। इलेक्ट्रिक वाहनों की आवाजाही के पैटर्न के आधार पर उचित स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाने चाहिए।

सत्र के शुरुआत में आद्री की ही मेम्बर-सेक्रेटरी डा0 अस्मिता गुप्ता ने सभी श्रोताओं का स्वागत किया। आद्री कें ईआइएसीपी सेन्टर की काॅ-आॅर्डिनेटर डा0 मौसमी गुप्ता ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का संचालन सीएसईसी के डा0 सुनील कुमार गुप्ता ने किया।

(अभिषेक प्रसाद)